पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0
(राजभवन सूचना परिसर)
———————

# राज्यपाल जी ने पत्रिका 'अवध सम्पदा' के वाल्मीकि विशेषांक का विमोचन किया

———————

## महापुरूषों के जीवन से हमें मानवता के कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिलती है

———————

## देव भाषा संस्कृत भारत की आत्मा है

———————

## संस्कृत भाषा को नई शिक्षा नीति में विशेष स्थान दिया गया है

———————

## संस्कृत ज्ञान मीमांसा का प्रसार विश्व बन्धुत्व की स्थापना के लिए जरूरी है–

**श्रीमती आनंदीबेन पटेल**

लखनऊः 21 अक्टूबर, 2021

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल, श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने आज राजभवन के गांधी सभागार में संस्कृत भारती न्यास अवध प्रांत द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'अवध सम्पदा' के वाल्मीकि विशेषांक का विमोचन किया। राज्यपाल जी ने विमोचन समारोह को सम्बोधित करते हुए कहा कि हजारों साल पहले महर्षि वाल्मीकि जी ने महाकाव्य 'रामायण' की रचना नहीं की होती तो आज हम सभी भगवान श्रीराम के आदर्शों एवं उनकी शिक्षाओं से वंचित रह जाते। भगवान श्रीराम के जीवन का ऐसा कोई पहलू नहीं हैं, जहां वह हमें प्रेरणा नहीं देते हैं। हमारी हर भावना में प्रभु राम झलकते हैं। महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन का समता, त्याग और करूणा का सन्देश सभी के लिये प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि महापुरूषों के जीवन से हमें मानवता के कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा मिलती है।

श्रीमती आनंदीबेन पटेल ने कहा कि देव भाषा संस्कृत भारत की आत्मा है। देश के धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक जीवन एवं विकास की कुंजी संस्कृत भाषा में ही समाहित है। संस्कृत देश की सभी भाषाओं की जननी है। राज्यपाल जी ने कहा कि संस्कृत हमारी संस्कृति का मेरूदण्ड है, जिसने सहस्त्रों वर्षों से हमारी अनूठी भारतीय संस्कृति को न केवल सुरक्षित रखा है, बल्कि उसका संवर्धन तथा पोषण भी किया है। उन्होंने कहा कि संस्कृत अपने विशाल साहित्य, लोक हित की भावना, तथा उपसर्गों के द्वारा नये–नये शब्दों के निर्माण की क्षमता के कारण आज भी अजर–अमर है। उन्होंने कहा कि देश की हजारों सालों की वैचारिक प्रज्ञा को समझने के लिए संस्कृत ही एक माध्यम है।

राज्यपाल जी ने कहा कि संस्कृत भाषा को नई शिक्षा नीति में विशेष स्थान प्राप्त हुआ है। इसके माध्यम से संस्कृत की प्रासंगिकता को नई दिशा मिलेगी। संस्कृत भाषा को जनभाषा बनाने के लिए सभी की सहभागिता आवश्यक है। उन्होंने कहा कि सबको संस्कृत पढ़ने और बोलने के प्रयास करने चाहिए। संस्कृत ज्ञान मीमांसा का प्रसार विश्व बन्धुत्व की स्थापना के लिए भी आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ज्ञान–विज्ञान का मूल आधार संस्कृत भाषा में ही मिलता है।

इस अवसर पर संस्कृत भारती अवध प्रांत न्यास के अध्यक्ष श्री जे0पी0 सिंह, संस्कृत भारती अवध प्रांत के अध्यक्ष श्री शोभनलाल उकील, सचिव, संस्कृत भारती अवध प्रांत न्यास श्री कन्हैयालाल झा तथा अखिल भारतीय महामंत्री श्री श्रीश्देव पुजारी, सुश्री वन्दना द्विवेदी, सुश्री नूतन सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

————————

राम मनोहर त्रिपाठी/राजभवन (66/23)
सम्पर्क सूत्र
9453005360

संस्कृतभारती अवधप्रान्तः (न्यासः)
अवधसम्पदा
राज भवन उत्तर प्रदेश

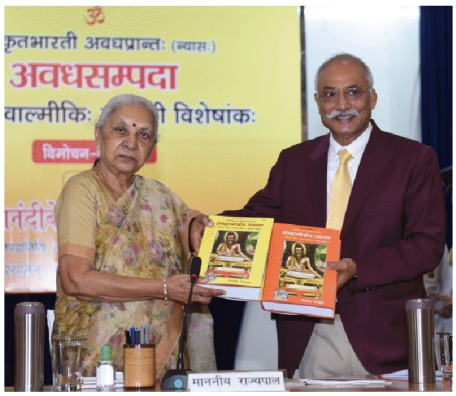
अवधसम्पदा
माननीय राज्यपाल